International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 26-01-2020; Accepted: 27-02-2020; Published: 28-03-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 14-15

पुराणों में माँ और पत्नी के रूप में नारी का आदर्श स्वरुप

श्रीमती विनीता राजपुरोहित
शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययन शाला विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी अपने आदर्श स्वरूप के कारण एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर विराजमान या प्रतिष्ठित है। पाश्चात्य शिक्षा एवं प्रचार से भारत में भी नारी अधिकार का आन्दोलन चल पड़ा है। पुराणों में नारी का एक ऐसा सुन्दर आदर्श चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसे संसार से कुछ लेना नहीं है वह हमारी देवी अन्नपूर्णा है, देना ही जानती लेने की आकांक्षा उसे नही। यद्यपि श्रुति–स्मृति पुराण इतिहास आदि से लेकर वर्तमान समय तक के संत महात्माओं ने वैराग्य की प्राप्ति के प्रसंग में नारी–निन्दा की है परन्तु उन्होंने नारी के आदर्श की प्रचुर प्रशंसा कर भारतीय संस्कृति के इतिहास में नारी के आदर्श स्वरूप की प्रचुर प्रशंसा कर भारतीय संस्कृति के इतिहास में नारी की गौरवशाली स्थिति को भी रेखांकित किया है। यदि नारी विषयक इन भिन्न–भिन्न विचारों को छोड़ दिया जाए तथा पुराणों में वर्णित नारी के आदर्श स्वरूप की ओर दृष्टिपात किया जाए तो नारी समाज को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज को अपनी संस्कृति पर गर्व होगा। यद्यपि नारी के कई स्वरूप है परन्तु मैंने पुराणों में वर्णित केवल माँ एवं पत्नी के आदर्श रूप को ही इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया है।

माँ के रूप में आदर्श नारी

पुराणों में माँ के लिए माता, जननी, शिवा, त्रिभुवन, मेष्ठा, देवी, परम आराधनीया, दया, शान्ति, क्षमा, घृति, स्वाहा, स्वधा, गौरी, पद्मा, विजया, जया सर्व दुखहा, निर्दोषा, दयार्दहदया तथा इक्कीस नाम आये है।[1] गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, भगवान विष्णु के समान कोई प्रभु नहीं है, शिव के समान कोई पूजनीय नहीं है तथा माता के समान कोई गुरु नहीं है। पुराणों में माता को पिता से भी बढ़कर बताया गया है क्योंकि वह बालक का पालन–पोषण करती है। पद्मचरित में भी माता के रूप में नारी को अपरिमित श्रद्धा का भाजन बताया है।[2] महाभारत में भी माता का स्थान पिता से भी अधिक माननीय बताया है क्योंकि वह मनुष्य की जन्मदात्री है।[3]

पुराणों के विभिन्न आख्यानो एवं श्लोको में माता का आदर्श स्वरूप एवं उसका महत्व दृष्टिगत होता है। कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न – मायावती के साथ द्वारका आने पर माता को प्रणाम करता है तथा माँ भी उसका मस्तक चुमती है।[4] घर से दूर रहने पर पुत्र शोक से रूक्मिणी का विह्वल रहना तथा बहुत दिनों की दुरीयों के बाद पुत्र प्रद्युम्न के मिलने पर उसे वात्सल्य–विभोर हो सहलोन का विवरण माता के आदर्श स्वरूप का परिचायक है।

नारी का गौरवशाली मातृत्व मोह का बन्धन संतान की वास्तविक प्रगति में बाधक नहीं बनता। माता कौशल्या का वात्सल्यमय कोमल हृदय यद्यपि राम वियोग की आशंका से अत्यधिक विदीर्ण होता है परन्तु उनका मातृत्व उन सभी कोमल भावनाओं से ऊपर राम को वनवास जाने के आदेश प्रदान करता है।[5] उ लक्ष्मण का त्याग सराहनीय है, परन्तु इसका श्रेय लक्ष्मण को नहीं उसका माता सुमित्रा को है, उनकी नवविवाहित पत्नी उर्मिला को है। पुराणों में माँ का वह आदर्श स्वरूप भी झलकता है जिसमें वह अपनी सन्तानों को अपने उद्देश्य के अनुरूप आदर्श के साँचे में ढालती है। हमारी संस्कृति के अनुसार अपनी सन्तानों का निर्माण करती है तथा पुत्र में वह आदर्श यथार्थ की संभाव्यता के रूप में मुखरित हो उठता है। कुन्ती ने पाण्डवों (पुत्रों) को प्रेरित किया था। क्षत्रिय नारी के स्तनपान को युद्ध भूमि में सार्थक बनाने के लिए। माता मदालसा ने लोरियों के रूप में जो शिक्षा दी थी वह उसके पुत्रों के लिए एक स्थायी प्रेरणा बन गया और संसार की वास्तविकता को पहचानकर वे जीवनमुक्त की अवस्था को प्राप्त हुए। [6]

पुराणों में भी माँ का वीरांगना रूप भारतीय संस्कृति के आदर्श को प्रस्तुत करता है।[7] पुत्र के जन्म काल में माता को जो पीड़ा उठाना पड़ती है वह तभी सफल होती है जब पुत्र शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें अथवा युद्ध में लड़ता हुआ मारा जाय।[8]

ऋग्वेद काल से ही माता को वीर जननी कहकर सम्मानित किया गया है और माता भी वीर पुत्रों पर गर्व का अनुभव करती हुई पाई गई है। अदिति को बलवान पुत्र उत्पन्न करने वाली बलवती माता के रूप में चित्रित किया है।[9] महाभारत में भी माता की श्रेष्ठता के लिए कहा गया है – वह सन्तान को जन्म देने से जननी उसके अंगों के पुष्टिवर्धन से अम्बा और वीर सन्तानों को पैदा करने से वीरसु है।[10]

पौराणिक कथाओं में भी माँ का वह आदर्श स्वरूप आज भी मानो भारतीय नारी संरक्षा कर रहा है तथा भारतीय संस्कृति के आदर्श की गवाही दे रहा है। ये माताएँ समाज में अपना स्थान खोजन नही गई थी वरन् समाज ही वात्सल्य का भिखारी होकर उनके आँचल की छाया में अभयदान माँगने जाता था। आज भारतवर्ष लाचार हे इसलिए नहीं कि उसके पास धन अथवा शस्त्र की कमी वरन् उस आदर्श मातृत्व का अभाव हो गया है जिसकी दिव्यता पर प्राचीन भारत की समृद्ध शान्त और प्रोन्नत अवस्था आश्रित थी। स्वतंत्र भारत में वीर, साहसी, मेधावी, पवित्र एवं सर्वतोभावेन उन्नतिशील संतति का सृजन हो, इसके लिए नारी का वह आदर्श माँ रूप प्रेरणा पुंज के रूप में आज पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।

पत्नी रूप के रूप में आदर्श नारी :

पुराणों में पत्नी के लिए कान्ता, जया, प्रिया, प्रियांगना, भामिनी, भार्या, वधु, वल्लभा, पत्नी, प्रियतमा, बहु, स्त्री, सदाचारिणी, श्रीमती आदि शब्द प्रयुक्त हुए है।[11] भारतीय संस्कृति में नारी का पत्नी रूप जिसमें कोई प्रतिद्वंद्विता, कोई संघर्ष नहीं है।

पति में भगवान की मूर्ति स्थापित करके वह अपने अपनत्व का समर्पण कर देती थी और वह आत्म निवेदन इतना पूर्ण, इतना गम्भीर, इतना व्यवस्थित होता था कि कोई परिस्थिति, कोई संकट उसे अपने कर्त्तव्य से विमुख करने में समर्थ नहीं हो सकती थी। पुराणों में भी ऐसे कई प्रसंग आये है जिसमें पतिव्रता नारी अलौकिक शक्ति–पूंज के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है। मार्कण्डेय पुराण के सोलहवें अध्याय में कुष्ठरोग से पीड़ित पति

की साध्वी स्त्री शाण्डिली द्वारा सूर्य का उदय रोक देने की कथा पवित्रता नारी की आलौकिक तेज को प्रकट करती है। इसी तरह सावित्री उपाख्यान एक महान पतिव्रता नारी को हमारे सम्मुख उपस्थित करता है जिसके आगे साक्षात् यमराज भी झुक जाता है और उसके स्वामी के जीवन को लौटा देता है। शिवपुराण की रूद्र संहिता के पार्वती खण्ड में द्विज पत्नी द्वारा पार्वतीजी को पतिव्रत धर्म का जो उपदेश दिया है उसमें पत्नी रूप में भारतीय नारी का आदर्श ही झलकता है। पार्वती जी को इस पतिव्रत धर्म के कारण ही 'नारी शिरोमणि' की पदवी प्राप्त हुई। इसी तरह अनुसुया द्वारा ब्रह्ममणी को जिसने पति तप से सुर्योदय को रोक दिया था जो उपदेश दिया उसमें भी आदर्श पतिव्रता नारी को देखा जा सकता है। पतिव्रता स्त्रियों में सबसे पहले दक्ष कन्या सती का नाम लिया जाता है। उन्हीं के नाम पर अन्य पतिव्रता स्त्रियाँ भी 'सती' उपाधि से विभुषित हुई है। वाल्मिकी, व्यास, कालिदास और भवभूति ने भगवतीजनक नन्दिनी का चरित्र भारतीय पत्नी के आदर्श रूप में स्थापित किया है। वाल्मिकी रामायण के अनेक प्रसंग भी नारी के आदर्श रूप के प्रमाणभुत है। रावण के बार–बार प्रार्थना करने पर सीता ने जो अवहेलना सूचक वचन कहे है उससे भारतीय नारी का गौरव सुरक्षित है।

गृहस्थ धर्म के प्रतिपादन के साथ पुराणों में पत्नी की महत्ता को बतलाया गया है और सामाजिक जीवन में उसे उचित स्थान दिये जाने का समर्थन किया है। बौद्ध युग में नारी को मोक्ष प्राप्ति में बाधक समझा गया। बुद्ध भी अपनी स्त्री यशोधरा को आकस्मिक रूप से छोड़कर चले गये थे। पुराणों में इस धारणा को सर्वथा अग्राह्य बतलाकर स्त्रियों के ऐसे उपाख्यान उपस्थित किये गये जिनमें उनको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की पुर्णरूप से सहायिकी माना गया।[12] मार्कण्डेय पुराण में मंदालता उपाख्यान में कहा गया है – पति को भार्यों की सदा रक्षा और पालन करना चाहिए।भार्या भर्ता की सहायिका होने पर सम्यक प्रकार धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि का निमित्त होती है।[13] भार्यों एवं भर्ती दोनों ही जब परस्पर में अनुकूल होते है, तभी धर्म की प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए देवता पितृ, भृत्य और अतिथियों का सत्कार न होने से धर्माचरण की पूर्ति नहीं होती। यदि पुरुष पर्याप्त धन कमाकर ले आवे पर घर में भार्या न हो तो वह सब धन बिना कुछ लाभ पहुँचाययेधाय को प्राप्त होता है।[14] इसलिए पुरुष और स्त्री जब समान रूप से धर्म का पालन करते है तभी तीनों का लाभ करने में समर्थ होते है। वास्तव में जैसे एक पहिये का रथ नही चल सकता और एक पंख की चिड़ियाँ नहीं उड़ सकती वैसे ही भार्या से रहित अकेला पुरुष कोई भी कार्य नहीं कर सकता। इस बात को पुराणकोश ने भी किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। पुराणों में तो आदर्श पतिव्रता नारी के लिए यहाँ तक कहा गया है कि – पतिव्रता का चरण जहाँ–जहाँ धरती का स्पर्श करता है वह स्थान तीर्थ भूमि की तरह मान्य है जैसे गंगा में स्नान करने से शरीर पवित्र होता है उसी प्रकार पतिव्रता का दर्शन करके सम्पूर्ण गृह पवित्र हो जाता है।

नारी सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और कष्ट में सांत्वना देने वाली है। मार्ग को सुगम बनाने का एकमात्र साधन भी वही है। मानव को पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँचाने के लिए एकमात्र साधन पतिव्रता नारी को माना गया है।

अपना आदर्श रूप स्थापित करने के लिए कितना त्याग करना पडा इसके उदाहरण पौराणिक कथाओं में भरे पड़े है तथा इसकी पुष्टि कई इतिहास ग्रन्थों से भी होती है।पुराणों में वर्णित उन सभी नारियों का यहाँ वर्णन करना सम्भव नहीं है जिन्होंने अपने त्याग से अपने गुणों से भारतीय इतिहास को स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य बनाया है। यदि भारतवर्ष की नारी अपना धर्म परित्याग कर देती तो आज आर्यावर्त अखिल विश्व की दृष्टि में कभी का गिर गया होता। यदि देखा जाय तो हमारे देश की आन–बान–शान नारी समाज ने ही रखी है। कबीदासजी ने भी कहा है –पतिव्रता मैली भली, गले काँच की पोत। सब सखियन में यो दिपै–ज्यौ रविससि की जोत।।

आधुनिक युग में यह आपत्ति हो सकती है कि ये सब सतयुग की बाते है। कलियुग में इनकी संभावना नहीं परन्तु राजपुताने का स्वर्ण इतिहास आज भी विलुप्त नहीं हुआ है। चूंडावत सरदार की नवोढ़ा पत्नी का अपूर्व बलिदान आज भी कनकाक्षरों में जगमगा रहा है। पुराणों में नारी को भोग की सामग्री मानना उसका अपमान माना है। परन्तु आज नारी आये दिन वासनाओं की शिकार हो रही है, विवाह–विच्छेद के नियम के अंतर्गत आये दिन पति पत्नी में तलाक हो रहे है। दुःख है कि आज कृत्रिम सभ्यता ने नारी के उस तपयुत स्वभाव को उसे माया मोहित करके बुरी तरह से छीन लिया है अथवा यो कहें कि नारी ने बाह्य संसार की चकाचौंध से प्रभावित होकर उसे स्वयं ही खो दियाहै। आज समाज में नारी को स्थान अवश्य मिला है परन्तु पूजनीय पुराणों में वर्णित उस आदर्श नारी के रूप में नही। आज विपरीत परिस्थितियों में नारी–जाति के लिए सतीत्व धर्म ही उसके सर्वविध कल्याण का एक मात्र उपाय है। पुरुषों को भी उन्हें स्वधर्म पर प्रतिष्ठित करने में सहयोग एवं सुविधा प्रदान करनी चाहिए। इससे समाज एवं राष्ट्र की उन्नति होगी तभा भारतीय नारी का जो आदर्श स्वरूप था, वह इतिहास में उसी तरह स्वर्णाक्षरों में सुरक्षित रह सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1. पुरोहित, सोहन कृष्ण, पुराणों में भारतीय संस्कृति, जोधपुर 2007 से उद्घृत
2. जैन,रमेश चन्द्र, पदमचरित में प्रतिपादित भारतीय संस्कृति पृ. 37
3. शान्ति रानी,महाभारत में धर्म : पृ.337
4. आचार्य श्रीराम ष्षर्मा (सं.) हरिवंषपुराण,प्रद्युम्न मायावती का द्वारिका आगमन,ष्लोक33–36
5. .श्यामसिंहःटीका, रामचरित मानस रचयिता तुलसीदास पृ.404
6. मार्कडेय पुराण (सं.)पं.श्रीराम षर्मा आचार्य–मदालसा का पुत्र उल्लेपन ष्लोक 11–62
7. मार्कण्डेय पुराण,मदालसा उपाख्यान, ष्लोक 44–46
8. .या सुबाहु स्वडगुरि सुषमा बहुसुवरी–ऋग्वेद2/32/711(उदधृत–ऋग्वेद 2,32,711
9. महाभारतः12.266.31
10. चौधरी राममूर्तिःहरिवंष पुराणःएक सांस्कृतिक अध्ययन पृ.89
11. मार्कण्डेय पुराण,प्रथम खण्ड दत्तात्रेय माहात्त्य वर्णनः ष्लोक 31–32 सपादक श्रीराम ष्षर्मा आचार्य
12. मत्स्यपुराण,प्रथम खण्ड, (सं.)श्रीराम ष्षर्मा आचार्य,भूमिका, पृ. 27
13. षिवपुराण प्रथम खण्ड (सं.) श्रीराम शर्मा आचर्य श्लोक1–80 पृ.389–402
14. मार्कण्डेय पुराण दत्तात्रेय माहात्म्य वर्णन, ष्लोक 61–63, वाल्मीकि रामायण,5.26.10
15. 16 मार्कण्डय पुराणःमदालसा उपाख्यान, (सं.).) श्रीराम शर्मा आचार्य,श्लोक 19–66, स्कन्द पुराण,धर्माख्य खण्ड, अ.77